Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VIII, Issue No. XIV, Oct-2014, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

विज्ञान व कला संकाय के बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की अधिगम शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VIII, Issue No. XIV, October-2014, ISSN 2230-7540

विज्ञान व कला संकाय के बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की अधिगम शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन

Rakesh Dewda[1] Imtiyaz Mansoori[2]

[1]Lecturer, Govt. H. S. School, Mandwada (Barwani) MP Govt. MP

[2]Senior Lecturer, Swami Vivekanand Education College, Sendhwa (Barwani) MP

----------X----------

यह सर्वविदित है कि प्रत्येक अधिगमक अद्वितीय होता है। एक अधिगमक दूसरे अधिगमक से व्यक्तित्व, बुद्धि, अभिक्षमता, रुचि, सृजनात्मकता, आत्म–विष्वास, आकांक्षा स्तर, अध्ययन आदत इत्यादि विषेषताओं में भिन्न होते हैं। अधिगमकर्ताओं के मध्य पायी जाने वाली इन भिन्नताओं को वैयक्तिक भिन्नताएँ कहा जाता है। इन वैयक्तिक भिन्नताओं में एक महत्वपूर्ण अधिगम शैली भी होती है। वर्तमान षिक्षण अधिगम प्रक्रिया में षिक्षक की भूमिका प्रभावी होती है। षिक्षक षिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के केन्द्र में होता है और सक्रिय भूमिका अदा करता है। षिक्षक द्वारा अध्यापन कार्य अधिकांषतः व्याख्यान विधि व सामूहिक षिक्षण द्वारा किया जाता है। प्रायः ऐसा देखा जाता है कि यह सामूहिक षिक्षण प्रत्येक अधिगमकर्ताओं के पृथक–पृथक अधिगम हेतु पर्याप्त नहीं होता है, क्योंकि प्रत्येक अधिगमक की अधिगम शैली पृथक–पृथक होती है। अधिगम शैली का अर्थ उन विविध तरीकों या उपागमों से है, जिनका एक अधिगमक किसी विषेष कार्य के अधिगम में उपयोग करता है। विभिन्न विद्वानों ने अधिगम शैली को अलग–अलग प्रकार से वर्गीकृत किया है। सामान्यतः तीन प्रकार की अधिगम शैलियाँ होती हैं। दृश्य, श्रृव्य एवं स्पर्श या गतिज (ज्बजपसमध्ज्ञपदमेजीमजपब) अधिगम शैली। दृश्य अधिगम शैली वाले अधिगमक व्याख्यान के दौरान रेखाचित्रों, चित्रों, व्यंग्य चित्रों, प्रतिमानों, दृश्य सामग्रियों, लेखाचित्रों (बिंतजे), नक्शों/मानचित्रों इत्यादि पर अधिक केन्द्रण प्रदर्शित करते हैं। वे प्रायः अध्यापक के द्वारा किए गए प्रदर्शन पर अधिक ध्यान केन्द्रित करते हैं। श्रृव्य अधिगम शैली वाले अधिगमक व्याख्यान के दौरान अध्यापक की व्याख्या पर अधिक केन्द्रण प्रदर्शित करते हैं और अधिगम के दौरान वे दृश्यों के स्थान पर व्याख्या को सुनने में अधिक ध्यान लगाते हैं। स्पर्ष या गतिज अधिगम शैली वाले अधिगमक अधिगम के दौरान वस्तुओं को परिचालित (डंदपचनसंजम) कर व करके सीखने (स्मंतदपदह इल क्वपदह) के द्वारा प्रभावी अधिगम करते हैं। अध्यापक का सामान्य विधि या व्याख्यान विधि द्वारा शिक्षण इन सभी प्रकार के अधिगम शैली वाले अधिगमकर्ताओं को संतुष्ट नहीं कर पाता है। इस कारण अध्यापक व्याख्यान के साथ कई अन्य विधियाँ जैसे– प्रदर्शन, परियोजना, परिचर्चा, समूह चर्चा, शैक्षिक भ्रमण इत्यादि का उपयोग करते हैं, ताकि विभिन्न अधिगम शैलियों को संतुष्ट किया जा सके। इसके साथ ही विभिन्न संकाय की अलग–अलग प्रकृति के कारण भी इन संकायों का अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की अधिगम शैली में भिन्नता होती है। इस कारण से भी अलग–अलग संकायों के विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों का अध्ययन आवश्यक है।

संबंधित साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट है कि अधिगम शैली से संबंधित **रेन्जुल्ली एवं स्मिथ (1978), डन एवं अन्य (1984) व किफे एवं मोन्क (1986)** आदि ने विकासात्मक कार्य किए एवं निर्मित उपकरणों की प्रभावषीलता का अध्ययन किया। **माथुर (1985)** ने पाया कि अधिगम शैली का उपलब्धि एवं समायोजन के साथ सार्थक सहसंबंध है। **किफे एवं मोन्क (1986)** ने पाया कि अधिगम शैली में संज्ञानात्मक, भावात्मक व मनोवैज्ञानिक स्तर पर अंतर होता है। **टोरेन्स (1986)** ने पाया कि प्रतिभाशाली विद्यार्थी शांत एवं एकाकी अधिगम को प्राथमिकता देते हैं। **डन एवं डन (1987)** ने पाया कि जब अधिगमक उनकी प्राथमिकता दी गयी शैलियों में से अध्ययन करते हैं, तो वे प्रभावी अधिगम करते हैं। **स्टाहल (2002)** ने पाया कि अधिगम शैली एवं अनुदेशन विधि का विद्यार्थियों के अधिगम पर सार्थक प्रभाव है। **पटेल (2007)** ने पाया कि उपचार, अधिगम शैली एवं उनकी अन्तर्क्रिया का विद्यार्थियों की उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है। **निशा (2009)** ने पाया कि विभिन्न संकायों का विद्यार्थियों की अधिगम शैली पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है। इन सीमित शोध कार्यों में अधिगम शैली की प्रभाविता का उपलब्धि, बुद्धि, समायोजन आदि परिवर्तियों के संबंध में प्रभाविता का अध्ययन किया गया है। साथ ही अधिगम शैली की उपचार के साथ अन्तर्क्रिया का उपलब्धि के सन्दर्भ में प्रभाविता से संबंधित शोध कार्य किया गया है। विभिन्न संकायों का विद्यार्थियों की अधिगम शैली पर प्रभाव से संबंधित केवल एक ही शोध कार्य शोधकर्ता को उपलब्ध हो पाया है। इससे प्रस्तुत शोध की आवश्यकता प्रतिपादित होती है।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का अग्र उद्देश्य था–

बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के आधारभूत शैक्षिक संकाय (विज्ञान व कला) का अधिगम शैली पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना

प्रस्तुत शोध की अग्र परिकल्पना थी–

बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के आधारभूत शैक्षिक संकाय (विज्ञान व कला) का अधिगम शैली पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

www.ignited.in

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध की समष्टि इन्दौर शहर के बी. एड. प्रशिक्षणार्थी थे। प्रस्तुत शोध के न्यादर्ष चयन हेतु सुविधाजनक न्यादर्श तकनीक का उपयोग किया गया। न्यादर्ष हेतु इन्दौर शहर के देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के शिक्षा अध्ययनशाला के 55 बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया। इन विद्यार्थियों की उम्र 22–32 वर्ष के मध्य थी। चयनित विद्यार्थी दोनों अनुदेशन माध्यम हिन्दी व अंग्रेज़ी माध्यम के थे। इन विद्यार्थियों में उच्च, मध्यम एवं निम्न तीनों सामाजिक–आर्थिक स्थिति तथा षहरी व ग्रामीण दोनों आवासीय पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थी सम्मिलित थे। इन विद्यार्थियों में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा वर्ग व सामान्य वर्ग अर्थात् आरक्षित एवं अनारक्षित दोनों वर्ग के विद्यार्थी सम्मिलित थे।

शोध का प्रकार

प्रस्तुत शोध कार्य सर्वेक्षण प्रकार का था, जिसमें इन्दौर शहर के देवी अहिल्या विष्वविद्यालय

के शिक्षा अध्ययनशाला के 55 बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की अधिगम शैली का सर्वेक्षण किया गया।

उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य में अधिगम शैली एवं आधारभूत शैक्षिक संकाय परिवर्तियों के संबंध में जानकारी एकत्रित की गयी। इनमें से अधिगम शैली का आकलन कमलेश झा द्वारा निर्मित अधिगम शैली अनुसूची (1999) द्वारा किया गया। विद्यार्थियों के आधारभूत शैक्षिक संकाय से संबंधित प्रदत्त के एकत्रीकरण के लिए सामान्य जानकारी प्रपत्र का उपयोग किया गया। इस सामान्य जानकारी प्रपत्र में 'स्नातक व स्नातकोत्तर के विषय' दो विकल्प थे। इन विकल्पों पर विद्यार्थियों को सही का निषान (√) लगाकर अपनी अनुक्रिया देनी थी। विद्यार्थियों के द्वारा दी गयी अनुक्रियाओं के आधार पर, उन्हें विज्ञान व कला आधारभूत शैक्षिक संकाय में वर्गीकृत किया गया।

प्रदत्त संकलन

सर्वप्रथम शिक्षा अध्ययनशाला के विभागाध्यक्षा से शोध कार्य हेतु अनुमति ली गयी। तत्पश्चात् शिक्षा अध्ययनशाला के न्यादर्श हेतु चुने गए विद्यार्थियों को मौखिक रूप से दिशा–निर्देश देकर शोध का उद्देश्य स्पष्ट किया गया। उन्हें यह स्पष्ट किया गया कि इस परीक्षण का उनकी किसी भी शैक्षणिक परीक्षाओं से कोई संबंध नहीं है। विद्यार्थियों से आत्मीयता के संबंध स्थापित कर अब सम्पूर्ण न्यादर्श पर कमलेश झा द्वारा निर्मित अधिगम शैली अनुसूची (1999) का प्रशासन किया गया। परीक्षण के प्रशासन के पश्चात् अब समस्त बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों से सामान्य जानकारी प्रपत्र द्वारा उनके आधारभूत शैक्षिक संकाय से संबंधित प्रदत्त एकत्रित किए गए। इस सामान्य जानकारी प्रपत्र में 'स्नातक व स्नातकोत्तर के विषय' विकल्पों पर विद्यार्थियों के द्वारा दी गयी अनुक्रियाओं के आधार पर, उन्हें विज्ञान व कला आधारभूत शैक्षिक संकाय में वर्गीकृत किया गया। सबसे अंत में अधिगम शैली अनुसूची की हस्त–पुस्तिका के आधार पर बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की मूल अनुक्रियाओं हेतु मानक फलांक प्राप्त कर, उनकी अधिगम शैली के वर्ग का निर्धारण किया गया। इस प्रकार बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की अधिगम शैली व आधारभूत शैक्षिक संकाय से संबंधित प्रदत्त एकत्रित किए गए।

प्रदत्त विश्लेषण

प्रस्तुत शोध के प्रदत्त विश्लेषण हेतु **काई वर्ग (χ^2) परीक्षण** सांख्यिकीय तकनीक का उपयोग किया गया।

परिणाम एवं विवेचना

बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के आधारभूत शैक्षिक संकाय (विज्ञान व कला संकाय) का अधिगम शैली पर प्रभाव

प्रदत्त विश्लेषण से प्राप्त परिणाम को तालिका 1 (1.1 व 1.2) व 2 में प्रदर्शित किया गया है–

अ) आधारभूत शैक्षिक संकाय (विज्ञान व कला संकाय) का अधिगम शैली (श्रृव्य व दृश्य) पर प्रभाव

तालिका 1.1: आधारभूत शैक्षिक संकाय (विज्ञान व कला संकाय) का अधिगम शैली (श्रृव्य व दृश्य) पर प्रभाव को प्रदर्शित करती काई वर्ग (χ^2) परीक्षण तालिका

अधिगम शैली / आधारभूत शैक्षिक संकाय	विज्ञान	कला	'χ^2' मान
श्रृव्य	7 (13.1)*	17 (10.9)	11.1'
दृष्य	23 (16.9)	8 (14.1)	

' 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक

* ( ) में अपेक्षित आवृत्ति प्रदर्शित की गयी है।

तालिका 1.1 से स्पष्ट है कि 'χ^2' का मान 11.1 है, जो स्वतंत्रता की कोटि= 1 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर पर 'χ^2' के मान (6. 64) से बड़ा है अतः गणना से प्राप्त काई वर्ग का मान स्वतंत्रता की कोटि= 1 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, अर्थात् आधारभूत शैक्षिक संकाय (विज्ञान व कला संकाय) का अधिगम शैली (श्रृव्य व दृष्य) पर सार्थक प्रभाव है। अतः इस स्थिति में षून्य परिकल्पना ''बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के आधारभूत शैक्षिक संकाय (विज्ञान व कला) का अधिगम शैली (श्रृव्य व दृश्य) पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है'' निरस्त की जाती है। आगे आधारभूत शैक्षिक संकाय के अधिगम शैली पर प्रभाव के अध्ययन के लिए अवषिष्ट विश्लेषण (त्मेपकनंस ।दंसलेपे) किया गया। अवषिष्ट विश्लेषण से प्राप्त परिणाम तालिका 1.2 में दिए गए हैं–

तालिका 1.2: आधारभूत शैक्षिक संकाय (विज्ञान व कला) व अधिगम शैली (श्रृव्य व दृश्य) के युग्मवार समायोजित मानक अवशिष्ट को प्रदर्शित करती तालिका

युग्म क्रमांक	आधारभूत शैक्षिक संकाय	अधिगम शैली	समायोजित मानक अवषिष्ट	सार्थकता का परिणाम
1	विज्ञान	श्रृव्य	3.3	0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक
2	विज्ञान	दृष्य	3.3	0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक
3	कला	श्रृव्य	3.3	0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक
4	कला	दृष्य	3.3	0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक

तालिका 1.2 से स्पष्ट है कि आधारभूत शैक्षिक संकाय व अधिगम शैली के युग्म क्रमांक 1 (विज्ञान व श्रृव्य) के लिए समायोजित मानक अवशिष्ट का मान 3.3 है, जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर

www.ignited.in

तालिका द्वारा प्राप्त´ मान (2.58) से बड़ा है, अतः यह समायोजित मानक अवशिष्ट (3.3) सार्थकता स्तर 0.01 पर सार्थक है। आगे तालिका 1.1 से स्पष्ट है कि विज्ञान शैक्षिक संकाय व श्रृव्य अधिगम शैली हेतु निरीक्षित आवृत्ति का मान (7), अपेक्षित आवृत्ति के मान (13.1) से सार्थक रूप से कम है, जो यह प्रदर्शित करता है कि आधारभूत शैक्षिक संकाय विज्ञान के विद्यार्थियों में श्रृव्य अधिगम शैली सार्थक रूप से कम पायी जाती है।

तालिका 1.2 से स्पष्ट है कि आधारभूत शैक्षिक संकाय व अधिगम शैली के युग्म क्रमांक 2 (विज्ञान व दृश्य) के लिए समायोजित मानक अवशिष्ट का मान 3.3 है, जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर तालिका द्वारा प्राप्त´ मान (2.58) से बड़ा है, अतः यह समायोजित मानक अवशिष्ट (3.3) सार्थकता स्तर 0.01 पर सार्थक है। आगे तालिका 1.1 से स्पष्ट है कि विज्ञान शैक्षिक संकाय व दृष्य अधिगम शैली हेतु निरीक्षित आवृत्ति का मान (23), अपेक्षित आवृत्ति के मान (16.9) से सार्थक रूप से अधिक है, जो यह प्रदर्शित करता है कि आधारभूत शैक्षिक संकाय विज्ञान के विद्यार्थियों में दृष्य अधिगम शैली सार्थक रूप से अधिक पायी जाती है।

तालिका 1.2 से स्पष्ट है कि आधारभूत शैक्षिक संकाय व अधिगम शैली के युग्म क्रमांक 3 (कला व श्रृव्य) के लिए समायोजित मानक अवषिष्ट का मान 3.3 है, जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर तालिका द्वारा प्राप्त´ मान (2.58) से बड़ा है, अतः यह समायोजित मानक अवषिष्ट (3.3) सार्थकता स्तर 0.01 पर सार्थक है। आगे तालिका 1.1 से स्पष्ट है कि कला शैक्षिक संकाय व श्रृव्य अधिगम शैली हेतु निरीक्षित आवृत्ति का मान (17), अपेक्षित आवृत्ति के मान (10.9) से सार्थक रूप से अधिक है, जो यह प्रदर्शित करता है कि आधारभूत शैक्षिक संकाय कला के विद्यार्थियों में श्रृव्य अधिगम शैली सार्थक रूप से अधिक पायी जाती है।

तालिका 1.2 से स्पष्ट है कि आधारभूत शैक्षिक संकाय व अधिगम शैली के युग्म क्रमांक 4 (कला व दृश्य) के लिए समायोजित मानक अवषिष्ट का मान 3.3 है, जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर तालिका द्वारा प्राप्त´ मान (2.58) से बड़ा है, अतः यह समायोजित मानक अवशिष्ट (3.3) सार्थकता स्तर 0.01 पर सार्थक है। आगे तालिका 1.1 से स्पष्ट है कि कला शैक्षिक संकाय व दृश्य अधिगम शैली हेतु निरीक्षित आवृत्ति का मान (8), अपेक्षित आवृत्ति के मान (14.1) से सार्थक रूप से कम है, जो यह प्रदर्शित करता है कि आधारभूत शैक्षिक संकाय कला के विद्यार्थियों में दृष्य अधिगम शैली सार्थक रूप से कम पायी जाती है।

प्रस्तुत शोध कार्य में यह पाया गया कि आधारभूत शैक्षिक संकाय विज्ञान के विद्यार्थी श्रृव्य की तुलना में दृश्य अधिगम शैली व आधारभूत शैक्षिक संकाय कला के विद्यार्थी दृश्य की तुलना में श्रृव्य अधिगम शैली को सार्थक रूप से अधिक प्रदर्शित करते हैं। इस परिणाम के अग्र सम्भावित कारण हो सकते हैं– विज्ञान विषय के अध्यापन में विषयवस्तु के स्पष्टीकरण हेतु संबंधित अध्यापक व्याख्यान के स्थान पर प्रदर्शन, प्रयोग, खोज इत्यादि विधियों को उपयोग में लाते हैं। इन समस्त विधियों में श्रृव्य के स्थान पर दृश्यों को प्राथमिकता दी जाती है। इसके अतिरिक्त प्रयोग विधि के दौरान विद्यार्थी समस्त उपकरणों का व्यवस्थापन, निरीक्षण, सावधानीपूर्वक पाठ्यांक को नोट करना, रसायनों की निश्चित मात्रा को उपयोग करना, विभिन्न जीव–जन्तुओं के विच्छेदन इत्यादि कार्य प्रमुखता से करता है। इन सभी कार्यों में श्रृव्य के स्थान पर दृश्य ज्ञानेन्द्रिय का उपयोग अधिक होता है। इस कारण से विज्ञान संकाय के विद्यार्थी श्रृव्य की तुलना में दृश्य अधिगम शैली को सार्थक रूप से अधिक प्रदर्शित करते पाए गए। इसके विपरीत कला संकाय के अध्यापक विषयवस्तु के स्पष्टीकरण हेतु अधिकांशतः व्याख्यान, संवाद, परिचर्चा, समूह चर्चा, वाद–विवाद इत्यादि विधियों को प्रमुखता से उपयोग में लाते हैं। इन समस्त विधियों में दृश्य के स्थान पर श्रृव्य ज्ञानेन्द्रिय को प्राथमिकता दी जाती है। इस कारण से कला संकाय के विद्यार्थी दृष्य की तुलना में श्रृव्य अधिगम शैली को सार्थक रूप से अधिक प्रदर्शित करते पाए गए।

ब) आधारभूत शैक्षिक संकाय (विज्ञान व कला संकाय) का अधिगम शैली (सामूहिक व वैयक्तिक) पर प्रभाव

तालिका 2: आधारभूत शैक्षिक संकाय (विज्ञान व कला संकाय) का अधिगम शैली (सामूहिक व वैयक्तिक) पर प्रभाव को प्रदर्षित करती काई वर्ग (χ^2) परीक्षण तालिका

अधिगम शैली / आधारभूत शैक्षिक संकाय	विज्ञान	कला	'χ^2' मान
सामूहिक	12 (14.5)*	13 (10.5)	1.95–ϑ
वैयक्तिक	20 (17.5)	10 (12.5)	

ϑ. 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं

* ( ) में अपेक्षित आवृत्ति प्रदर्शित की गयी है।

तालिका 2 से स्पष्ट है कि 'χ^2' का मान 1.95 है, जो स्वतंत्रता की कोटि= 1 तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर पर 'χ^2' के मान (3. 84) से छोटा है अतः गणना से प्राप्त काई वर्ग का मान स्वतंत्रता की कोटि= 1 तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है, अर्थात् आधारभूत शैक्षिक संकाय (विज्ञान व कला संकाय) का अधिगम शैली (सामूहिक व वैयक्तिक) पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है। अतः इस स्थिति में शून्य परिकल्पना ''बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के आधारभूत शैक्षिक संकाय (विज्ञान व कला) का अधिगम शैली (सामूहिक व वैयक्तिक) पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है'' निरस्त नहीं की जाती है। अतः निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि आधारभूत शैक्षिक संकाय (विज्ञान व कला संकाय) का अधिगम शैली (सामूहिक व वैयक्तिक) पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। अर्थात् विज्ञान व कला दोनों आधारभूत शैक्षिक संकाय वाले विद्यार्थी एक समान प्रभावी रूप से सामूहिक व वैयक्तिक अधिगम शैली प्रदर्शित करते पाए गए।

प्रस्तुत शोध कार्य में यह पाया गया कि विज्ञान व कला दोनों आधारभूत शैक्षिक संकाय वाले विद्यार्थी एक समान प्रभावी रूप से सामूहिक व वैयक्तिक अधिगम शैली को प्रदर्षित करते हैं। इस परिणाम का सम्भावित कारण यह है कि विज्ञान व कला दोनों संकाय वाले विद्यार्थी व्याख्यान के अतिरिक्त परियोजना, संवाद, परिचर्चा, समूह चर्चा, वाद–विवाद, भूमिका निर्वाह, प्रश्नोत्तरी विधि इत्यादि विधियों से अध्ययन करते हैं। इन सभी विधियों में दोनों संकाय के विद्यार्थियों हेतु वैयक्तिक एवं सामूहिक रूप से अधिगम करने हेतु समान अवसर होते हैं। इस

कारण से दोनों संकाय के विद्यार्थी एक समान प्रभावी रूप से सामूहिक व वैयक्तिक अधिगम शैली प्रदर्शित करते पाए गए।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध से अग्र निष्कर्श प्राप्त हुए–

1- आधारभूत शैक्षिक संकाय विज्ञान के विद्यार्थी श्रृव्य की तुलना में दृष्य अधिगम शैली को सार्थक रूप से अधिक प्रदर्शित करते पाए गए।

2- आधारभूत शैक्षिक संकाय कला के विद्यार्थी दृश्य की तुलना में श्रृव्य अधिगम शैली को सार्थक रूप से अधिक प्रदर्शित करते पाए गए।

3- विज्ञान व कला दोनों आधारभूत शैक्षिक संकाय वाले विद्यार्थी एक समान प्रभावी रूप से सामूहिक व वैयक्तिक अधिगम शैली को प्रदर्शित करते पाए गए।

सन्दर्भ :

Boud, D. J.: Individualized Instruction. In Husen, T. and Postlethwaite, T.N. (Eds.): The International Encyclopedia of Education (Vol.-5). Pergamon Press, New York, 1985, pp. 2451-2457.

Fletcher, J. D.: Individualized System of Instruction. In Marvin, C. A. et al. (Eds.): Encyclopedia of Educational Research. Macmillan Publishing Company, New York, 1992, pp. 613-618.

Howard, E. R.: Individualized Instruction. In Lee, C.D. (Ed.): Encyclopedia of Education (Vol.-5). Macmillan Company and The Free Press, U.S.A., 1971, pp. 101-106.

NCERT: Forth Survey of Research in Education (1983-1988). New Delhi: NCERT, 1991.

NCERT: Fifth Survey of Research in Education- Vol I & II (1988-1992). New Delhi: NCERT, 1999-2000.

NCERT: Sixth Survey of Research in Education-Vol I & II. New Delhi: National Council of Educational Research & Training, 2006-07.

Pal H. R.: Methodologies of Teaching & Training in Higher Education (Hindi) Delhi: Hindi Madhyam Karyanvay Nideshalaya, Delhi University, 2000.

Pal, H. R. and Devara, R.: Paradidm shift towards 'Student-Content Interaction' from 'Teacher-Student Interaction'. In Teacher Today, Bikaner, July-September, 2011, pp.7-19.

Panwar, N.: Comparative study of Learning Styles of different discipline students of Higher Secondary level. Unpublished M. Ed. Dissertation, Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore, 2010-11.

Patel, M.: A comparative study of effectiveness of Audio-Visual Materials and Traditional Method for teaching English Grammar in terms of Achievement in English Grammar of Class VIII students. Unpublished M. Ed. Dissertation, Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore, 2007-08.

Thomas, R. M.: Individualized Instruction. In Husen, T. and Postlethwaite, T. N. (Eds.): The International Encyclopedia of Education (Vol.-5). Pergamon Press, New York, 1985, pp. 2446-2451.

Wislon, B. (Ed.): Training Technology Programme–Method of Training: Individualised Instruction (Vol-III). Parthenon publishing house, England, 1987.

Websites:

www.engr.ncsu.edu/learningstyles/ilsweb.html, 6 July, 2012.

www.ldpride.net/learningstyles.MI.htm, 24 August, 2012.

www.learningstyles.org/17 July, 2012.

www.learningguide.org/learningstyles.htm, 11 July, 2012.

www.learningrx.com/types-of-learning-styles-faq.htm, 9 August, 2012.

www.lifehack.org/articles/lifehack/four-learning-styles.html, 9 September, 2012.